

## कार्यकारिणी संक्षेप

### 1.0 परियोजना का वर्णन

#### 1.1 सामान्य जानकारी

यूरो बॉण्ड उद्योग प्राइवेट लिमिटेड (ई.आई.पी.एल.) यूरो ग्रुप की एक ईकाई है। ई.आई.पी.एल. की ग्राम धरमपुरा जिला जबलपुर मध्यप्रदेश में एक लौह अयस्क (बेनिफिसीयेसन पेलेटाइजेशन) का उद्योग लगाने की योजना है। इस प्लॉन्ट की उत्पादन क्षमता 1.0 मैट्रिक टन प्रतिवर्ष होगी एवं इसके लिए आवश्यक भूमि 12.10 हैक्टेयर भी उपलब्ध है। प्लॉन्ट में लौह अयस्क की पूर्ति निकट की खानों से की जाएगी। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की नई ई.आई.ए. अधिसूचना दिनांक 14.09.2006 के अनुसार यह परियोजना "ए" व क्रम संख्या 3 (ए) के अन्तर्गत आती है।

#### 1.2 परियोजना का विवरण

क्र.सं.	विशेष	विवरण
अ.	परियोजना का नाम	लौह अयस्क (बेनिफिसीयेसन व पेलेटाइजेशन)
ब.	परियोजना की स्थिति	
1.	गांव	धरमपुरा
2.	तहसील	सिहोरा
3.	जिला	जबलपुर
4.	राज्य	मध्यप्रदेश
स.	क्षेत्र विवरण	
1.	खनन	12.10 हैक्टेयर
2.	हरित पट्टिका	4 हैक्टेयर (कुल क्षेत्रफल का 33 प्रतिशत)
3.	टोपोशीट नम्बर	64ए/3
4.	अक्षांश	23 <sup>0</sup> 23' 56.17'' N

5. देशान्तर  $80^{\circ} 01' 45.13'' E$

**द. परियोजना की आवश्यकताएँ**

- |    |                          |                           |
|----|--------------------------|---------------------------|
| 1. | कुल जल की आवश्यकता       | 1040 मी. क्यूबिक प्रतिदिन |
| 2. | कुल विद्युत              | 13 मेगावाट                |
| 2. | कुल मानवश्रम की आवश्यकता | 244                       |
| 3. | परियोजना की कुल लागत     | 209.09 करोड़ रुपये        |
| 4. | पर्यावरणीय संरक्षण राशि  | 800 लाख                   |

**य. परियोजना क्षेत्र का विवरण**

- |    |  |  |
|----|--|--|
| 1. | निकटतम राष्ट्रीय राजमार्ग  | एन.एच. 7, 3.5 कि.मी.                           |
| 2. | निकटतम रेलवे स्टेशन  | गोशलपुर, 4 कि.मी.                              |
| 3. | निकटतम हवाई अड्डा  | जबलपुर, 50 कि.मी.                              |
| 4. | राष्ट्रीय उद्यान, आरक्षित / संरक्षित वन, वन्यजीव अभ्यारण, (10 कि.मी. त्रिज्या में) | बोहरा संरक्षित वन (8.5 कि.मी. द0-पु0 दिशा में) |
| 5. | निकटतम बड़ा शहर  | जबलपुर   |
| 6. | निकटतम नदी   | हिरैन नदी (2 कि.मी. उत्तर दिशा में)            |

**1.3.1 कच्चे माल की आवश्यकताएँ**

क्र.सं.	कच्चा माल	मात्रा दस लाख टन प्रतिवर्ष	स्त्रोत
1.	लौह अयस्क	1740000	निकटतम खदान से
2.	बिटुमिन कोयला	42000	आयातित
3.	चूना पत्थर	15000	निकटतम खदान से
4.	कोल ब्रीज	10000	झारखण्ड, उड़ीसा

लौह अयस्क बेनिफिसियेशन एवं पैलेटाइजेशन प्लॉन्ट क्षमता : 1.0 एम.टी.पी.ए. परियोजना स्थल:-तहसील सिहोरा, जिला जबलपुर (मध्यप्रदेश)	कार्यकारिणी संक्षेप
---	---------------------

क्र.सं.	कच्चा माल	मात्रा दस लाख टन प्रतिवर्ष	स्रोत
5.	बेन्टोनाइट	10000	कच्छ, गुजरात
6.	भट्टी तेल	आवश्यकतानुसार	पास के पेट्रो कैमिकल वितरक द्वारा

### 1.3.2 प्रक्रिया

#### बेनिफिसीयेशन

- लौह अयस्क को अपशिष्ट पदार्थों से मुक्त करने के लिए ग्राइन्डिंग करना।
- चक्रण विधि द्वारा हल्के पार्टिकल्स को अलग करना।
- चुम्बकीय विधि द्वारा भारी कणों को अलग करना।
- रिवर्स फ्लोटेशन।
- थिकनर द्वारा डीवाटरिंग।
- सिरैमिक डिस्क फिल्टर द्वारा डीवाटरिंग करना।
- प्रेस फिल्टर द्वारा डीवाटरिंग करना।

#### पैलेटाइजेशन

इसके लिए ग्रेट किल्न तकनीक प्रस्तावित की गयी है:-

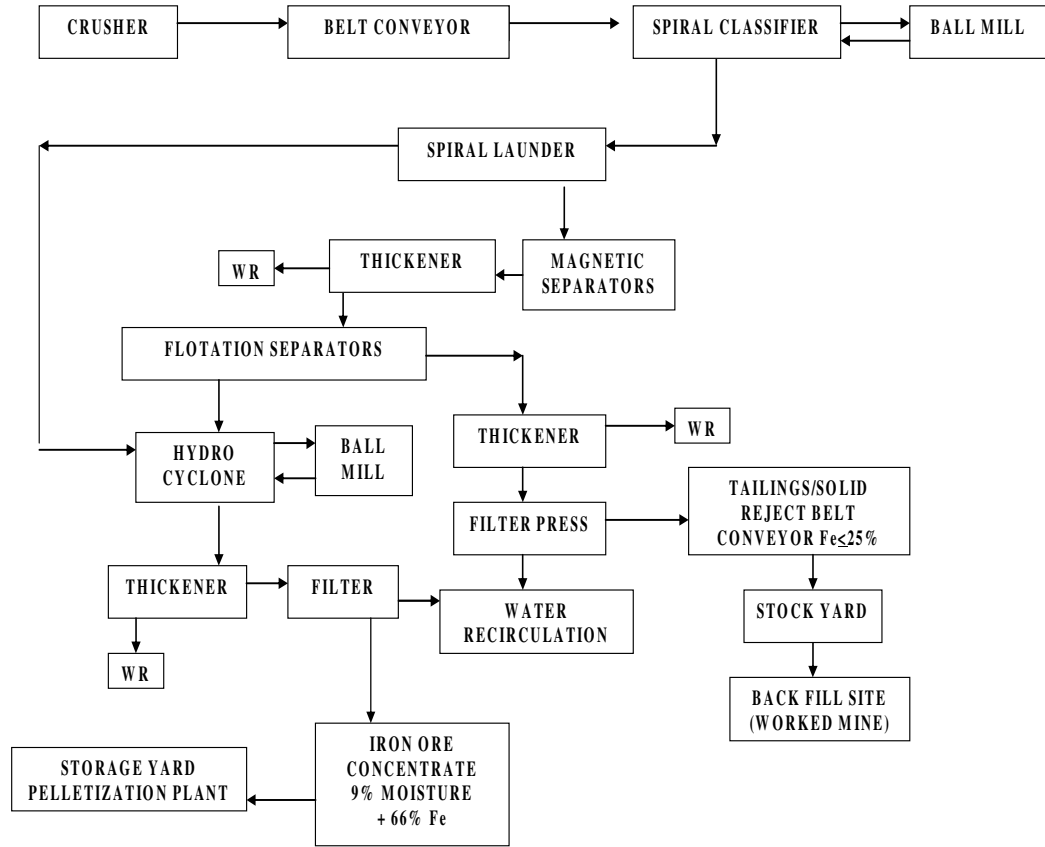
- ऐडिटिव (चूनापत्थर और कोयला) ग्राइन्डिंग।
- कोल पलवेराइजेशन
- ऐडिटिव, बाईन्डर और लौहे का प्रोपोशनेटिंग और मिक्सिंग।
- ट्रेवल गेट में गर्म करना और सुखाना।
- पलवेराइज कोल अग्नि में भूनना/इडुयोरेशन करना।
- वृत्तीय कोलर में ठण्डा एवं गर्म करना।
- इमिशन कन्ट्रोल के लिए ई.एस.पी. द्वारा बाहर निकलती गैस की सफाई करना।

#### 1.4 उपकरण विवरण

निम्न उपकरण प्रस्तावित किये गये हैं –

क्र. सं.	उपकरण	विवरण
1.	जॉ क्रशर	क्षमता 50 टी.पी.एच.
2.	ग्रेनुलेटर	50 टी.पी.एच.
3.	प्राईमरी बाल मिल	क्षेत्र 2.4 मी. व्यास X 5.8 मी. लम्बा
4.	डबल स्पाईरल क्लासिफायर	
5.	रोटरी स्क्रिन	क्षेत्र 1500 मी.मी. व्यास, 2 नग
6.	स्पाईरल लाउंडर	क्षेत्र 1500 मी.मी. व्यास, 8 सेट
7.	वर्टिकल पुलसेटिंग हाई ग्रेड मेगनेटिस सेपरेटर	एस.लोन. 1750, 2 नग
8.	फ्लोटेशन सेल	6 चेम्बर, 2.8 घनमीटर, आंतरिक व्यास 600 मी.मी. 4 सेट
9.	सैकेन्ट्री बाल मिल	2.1 मी. व्यास X 3 मी. लम्बा
10.	आटोमेटिक, फिल्टर प्रेस	2 सेट
11.	थिकनर टैंक / तालाब	व्यास 24 मी., 3 नग
12.	एगिटेशन टैंक	3 नग
13.	जल एवं स्लरी पम्प	16 नग
14.	प्रेस फिल्टर (स्लरी को सुखाने हेतु)	

### 1.5 प्रक्रिया



वाटर रिकवरी (WR) :- प्लॉन्ट में काम में लिए हुए पानी को एकत्र करने के बाद पुनः प्रक्रिया में उपयोग किया जायेगा ।

## 2.0 पर्यावरण का वर्णन

### 2.1 जलवायु स्थिति

- जलवायु सामान्यतया शुष्क रहती है।
- तापमान –  $5.3^{\circ}$  C से  $23.7^{\circ}$  C
- सापेक्षित आर्द्रता – न्यूनतम 21 से 52 प्रतिशत एवं उच्चतम 91 से 96 प्रतिशत।
- औसत वार्षिक वर्षा 793 मिलीमीटर है।

### 2.2 व्यापक वायु गुणवत्ता विश्लेषण

अध्ययन क्षेत्र में व्यापक वायु गुणवत्ता विश्लेषण 10 स्टेशनों पर 24 घण्टों के आधार पर किया गया। सभी 10 ए.ए.क्यू.एम. स्टेशनों के लिए एस.पी.एम. की औसत एकाग्रता 74 से 173 माइक्रो ग्राम प्रतिघन मी., आर.पी.एम. 31 से 63 माइक्रो ग्राम प्रतिघन मी., सल्फर डाई ऑक्साइड 6 से 11 माइक्रो ग्राम प्रति घन मी. और नाइट्रोजन के ऑक्साइड 9 से 18 माइक्रो ग्राम प्रति घन मी. के बीच पाया गया।

### 2.4 ध्वनि स्तर विश्लेषण

अध्ययन क्षेत्र में 10 स्टेशनों के लिये ध्वनि विश्लेषण किया गया जो यह दर्शाता है कि ध्वनि स्तर दिन में Leq मान में 45 dB (A) से 66 dB(A) तक है। रात के समय ध्वनि स्तर 40 से 49 dB (A) तक दर्ज किया गया है।

### 2.5 जल गुणवत्ता विश्लेषण

6 स्टेशनों से जल के नमूने एकत्रित किये गए और नमूनों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि सभी भूमि जल नमूनों में कुछ घुलित ठोस 201 मि.ग्रा. प्रति लीटर से 403 मि.ग्रा. प्रति लीटर तक, पी.एच.मान 7.05 से 7.68 तक, कुल कठोरता 216.14 मि.ग्रा. प्रति लीटर से 662.56 मि.ग्रा. प्रति लीटर और फ्लोराइड सांद्रता 0.14 से 0.59 मि.ग्रा. प्रति लीटर है।

### 2.6 मृदा गुणवत्ता विश्लेषण

5 स्टेशनों से मृदा के नमूने एकत्रित किए गये और विश्लेषण किया गया जो यह दर्शाता है कि पी.एच. मान 6.6 से 7.9 के बीच, ऑर्गेनिक कार्बन 0.62 से 2.31 प्रतिशत के बीच

है। मृदा की बनावट क्लेई लोमी से सैंडी लोमी हैं और कन्डेक्टिविटी 0.13 से 0.48 से 1200 मी. म्हो प्रति से.मी. है।

## 2.7 जैविक वातावरण

### वनस्पति

क्षेत्र में मुख्यतः पायी जाने वाली वनस्पति प्रजातियाँ है टीक (टैकटोना ग्रनडिस), साल (शोरिया रोबस्टा), साजा (टैरमीनैलिया टोमैंटोसा), बीजा (टैरोकारपस मारसुपियम), लैन्डीया (लैगरसट्रोमीया पैरवीपलोरा), हल्दु (अदीना कारडीफोलिया), डोकरा (अंगोजूनसस पैन्दुला), सलाई (बोसवीलिया सैरटा), ऑवला (अम्बलीका ओफीसीयनलीस), अमलतास (कैशिया फिस्टुला), बबूल (डेन्ड्रोकैलमॅस स्ट्रीक्टस), करंज (पोंगामिया पीनैटा), खैर (अकैशिया कटैचु) आदि।

### जीव जन्तु

अध्ययन क्षेत्र में पाये जाने वाले जीव जन्तु हैं नील गाय ( बोसलाफस ट्रगोकैमलस), लोमड़ी (वैलपास बंगालैन्सीस), हेअर (सेरवस एक्सीस), सियार (गैक्सेला डेंची ), गिलहरी (फूनमबुलस पिनाटी), मैगस (हरपेस्टस इडवारडसी), खरगोश (लेपस नीगरीकालीस), मैना (अक्रीडो थेरस ट्रीस्टीस) ब्लू रोक पीजन (कोलम्बा लीवीया), कोयल (यूडीनैमस), तोता (सीटैकूला क्रमेरी), कौआ (कोरवस स्पलेन्डस) इत्यादि।

## 2.8 सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण

2001 की जनगणना के अनुसार जबलपुर जिला की जनसंख्या 2151203 है। जनसंख्या का 12.73 प्रतिशत अनुसूचित जाति और 15.01 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति है। साक्षरता प्रतिशत 75.69 प्रतिशत है।

### 3.0 प्रत्याशित पर्यावरणीय प्रभाव और न्यूनिकरण उपाय

#### 3.1.1 मृदा पर प्रभाव

मृदा पर प्लांट और खनन गतिविधियों से होने वाले प्रदूषण प्रभाव निम्न प्रकार से हैं:-

- (i) धूल के कण जमा होने के कारण और सतही और भूमि जल द्वारा ठोस कणों के बह जाने के कारण मृदा की बनावट में परिवर्तन होंगे। इससे क्षेत्र की मृदा की छिद्रिलता (पोरोसिटी), पारगम्यता (परमिएबिलिटी) और दूसरी भौतिक विशेषताओं में परिवर्तन होंगे।
- (ii) व्यर्थ जल के डिस्चार्ज कारण मृदा अपरदन हो सकता है।

परन्तु इस परियोजना में प्लांट के लिए उपयुक्त सावधानीयां जैसे समूचित पर्यावरण नियंत्रण, पर्याप्त चिमनी की ऊँचाई होने से अध्ययन क्षेत्र में मृदा पर परियोजना के कार्यरत क्षेत्र के अलावा कोई विपरित प्रभाव नहीं पड़ेगा। इस प्रक्रिया से कोई व्यर्थ जल नहीं निकलने के कारण, मृदा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, आसपास की निष्क्रिय खदानों में टेलिंगस के डिस्पोजल से भूमि सुधार के साथ-साथ यह क्षेत्र हरित पट्टिका विकास योग्य भी बनेगा।

#### 3.1.2 भूमि उपयोग और फसल के चक्रण पर प्रभाव

- इस परियोजना का कुल क्षेत्रफल लगभग 12.10 हैक्टेयर है। इसमें से 33 प्रतिशत क्षेत्र जोकि लगभग 4 हैक्टेयर होगा, हरित पट्टिका विकास के लिए इस्तेमाल होगा।
- क्षेत्र में प्रारम्भिक तैयारियों से सम्बन्धित गतिविधियों जैसे सड़क का उपयोग और भण्डारण शेड का निर्माण आदि का कोई खास प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए भूमि उपयोग चक्रण पर प्रस्तावित परियोजना से पड़ने वाले प्रभाव नगण्य होंगे। प्राकृतिक उपस्थित लौह अयस्क की अशुद्धियों से बने हुये ठोस अपशिष्ट पदार्थ के डिस्पोजल से भूमि उद्धार होने से भूमि उपयोग पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।
- प्लांट के आस पास के क्षेत्र में जो फसल के चक्रण में वायु और जल के कारण कुछ प्रभाव पड़ेगा जिसे समूचित उपाय कर प्रभावहीन किया जायेगा।

### 3.1.3 वायु गुणवत्ता

- निर्माण के दौरान निर्माण स्थल के आस पास व्यापक वायु गुणवत्ता पर दूषणभाव पड़ेगा जो कि अस्थायी होगा, कम समय के लिये होगा और छोटे से क्षेत्र में सीमित होगा।
- बेनीफिसियेशन एवं पैलेटाइजेशन प्रक्रिया से वायु में निकलने वाले मुख्य उत्सर्जन हैं – पार्टिकुलेट, नाइट्रोजन के ऑक्साइड (NO<sub>x</sub>) और सल्फर डाई ऑक्साइड (SO<sub>2</sub>)।
- ट्रकों के चलने से होने वाले उत्सर्जन को वायु प्रदूषण का लगातार स्रोत नहीं माना गया है।
- परन्तु उपयुक्त सावधानीयां जैसे चिमनी की ऊँचाई, ईएसपी का उपयोग, बेग हाउस, बेग फिल्टर एवं स्पॉट बैग फिल्टर से धूल का उत्सर्जन कम होगा और केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण मण्डल मापदण्डों की सीमा में होगा।

### 3.1.4 जल गुणवत्ता

- परियोजना के निर्माण चरण के दौरान, जल आवश्यकता की पूर्ति ट्यूब वेल और आस पास के गांवों से की जायेगी। निर्माण अवस्था के दौरान भूमि जल संसाधनों के उपयोग का क्षेत्र की भूमि जल उपलब्धता पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- प्लांट प्रक्रिया से कोई व्यर्थ जल नहीं निकलेगा। बेनीफिसियेशन प्लांट से निकली हुई स्लरी एक खास प्रैस फिल्टर में डाली जाएगी। जो इस स्लरी में से जल को निकाल लेगी। इस फिल्टर से निकला हुआ सारा जल दुबारा से प्रक्रिया में प्रयोग में लाया जा सकेगा।

### 3.1.5 ठोस अपशिष्ट पदार्थ

- निर्माणावस्था के दौरान ठोस अपशिष्ट पदार्थ जैसे खोदी गई मिट्टी, कुछ व्यर्थ धातु और मशीनों से निकले तेल व ग्रीस (बहुत कम मात्रा में) उत्पन्न होंगे। यह व्यर्थ प्लांट स्थल पर मृदा को अस्थायी रूप से दूषित कर सकता है लेकिन यह छोटे क्षेत्र तक ही सीमित होगा।

- इस प्रक्रिया से कोई खतरनाक अपशिष्ट पदार्थ नहीं निकलेगा। क्योंकि इसमें खतरनाक रसायनों का प्रयोग नहीं है।
- प्राकृतिक उपस्थित लौह अयस्क की अशुद्धियों से बने हुये ठोस अपशिष्ट पदार्थ को आसपास की निष्क्रिय खदानों में भरा जाएगा। यह ठोस अपशिष्ट पदार्थ ईंट बनाने के लिए उचित होने के कारण पास के भट्टों में सप्लाई किया जाएगा। इसलिए प्लांट से कोई ठोस अपशिष्ट पदार्थ नहीं निकलेगा। जिससे भूमि पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

### 3.1.6 ध्वनि स्तर

लौह अयस्क क्रशर व बाल मील वेट ग्राइंडिंग युनिट अधिकतम ध्वनि स्तर करने वाली मशीने है। यहाँ पर अकाउस्टिक दिवार का प्रयोग किया जाएगा।

कार्य क्षेत्र में उपकरणों से उत्पन्न होने वाला सामान्य ध्वनि स्तर कार्य क्षेत्र में 85 Leq dB (A) से कम होगा व सीमा क्षेत्र में 70 Leq dB (A) से कम होगा। यह ध्वनि स्तर अस्थायी होगा और लम्बी दूरी के कारण नगण्य होगा।

### 4.0 पर्यावरणीय विश्लेषण कार्यक्रम

क्र.सं.	विवरण	मॉनिटरिंग की फ्रीक्वेन्सी
1	प्रोजेक्ट साइट की व्यापक वायु गुणवत्ता	तीन महीने में एक बार
2	स्टेक एमीषन्स	सप्ताह में एक बार
3	मौसमीय आंकड़ें	प्रतिदिन
4	ध्वनि स्तर मॉनिटरिंग	तीन महीने में एक बार
5	स्वास्थ्य जांच	वर्ष में एक बार प्लांट कर्मचारियों के लिए
6	जल की गुणवत्ता	तीन महीने में एक बार
7	मृदा की गुणवत्ता	तीन महीने में एक बार

## 5.0 अतिरिक्त अध्ययन

भूमिगत जल के पूर्ण शोधन एवं संवर्धन के लिए हेतु परियोजना क्षेत्र का भूमिगत जल के लिए अध्ययन किया गया और पाया गया कि वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए पास की पहाड़ी के ढलान के निकट बहते जल को रोक कर जल का संरक्षण किया जा सकता है। प्लांट क्षेत्र में और प्लांट के क्षेत्र के बाहर होने वाली वर्षा का पानी लगभग 20000 घनमीटर/प्रतिदिन होगा। जिसके लिए प्लांट क्षेत्र में वर्षा जल संरक्षण हेतु उचित प्लांट का निर्माण किया जावेगा और इस तरह वर्षा जल के निकास, उसके संवर्धन और भू-जल को बढ़ाने के उपाय किए गये हैं।

## 6.0 परियोजना के फायदे:-

परियोजना क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। यह क्षेत्र की पहली बड़ी परियोजना है। यह परियोजना परोक्ष व अपरोक्ष रूप से इस क्षेत्र में रोजगार एवं अन्य धंधों को बढ़ावा देगा जो कि परियोजना क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं को उत्पन्न करेगा। यूरो फाउण्डेशन समाज के विकास के लिए कार्यरत है और इनके कार्यक्रम यूरो ग्लोबल एकेडमी के माध्यम से जिसका मुख्यालय कच्छ एवं शाखा कार्यालय मुम्बई में स्थित है, के माध्यम से अनेक योजनाएं संचालित की जाती हैं। परियोजना क्षेत्र में यूरो फाउण्डेशन ग्राम पंचायतों के साथ मिलकर क्षेत्र के पूर्ण विकास के लिए अग्रसर है। परियोजना के 5 प्रतिशत लाभ को स्थानीय कल्याण के लिए उपयोग में लाया जाएगा। परियोजना में रोजगार के लिए वहाँ के क्षेत्रवासियों को प्राथमिकता दी जाती है। परियोजना क्षेत्र एवं खानों में हरित पट्टिका का निर्माण किया जाएगा जिससे क्षेत्र के भू-उपयोग में विकास होगा।

## 7.0 पर्यावरण प्रबंधन:-

### 7.1 वायु प्रदूषण:-

परियोजना में उत्पादन हेतु 99.95 प्रतिशत क्षमता के विभिन्न यंत्र, क्रशिंग प्लांट, कोल मिल, एडिटिव मिल सिस्टम में बैग फिल्टर, रॉ काल स्टोरेज व क्रशर ट्रांसफर पाईन्ट पर स्पॉट बैग फिल्टर व ग्रेट किल्न पर ई.एस.पी. लगाए जाएंगे, जिससे प्रदूषण न्यूनतम होगा। उत्सर्जन को सी.पी.सी.बी. के मानकों के अनुसार रखा जावेगा। सभी सड़के पक्की बनायी जावेगी एवं प्लांट के चारों तरफ के क्षेत्र को हरा-भरा बनाया जावेगा।

## 7.2 ध्वनि न्यूनिकरण

उच्च ध्वनि स्तर को कम करने के लिये, निम्न उपाय अपनाये जायेंगे –

- क्रशिंग और ग्राइंडिंग बंद पर्यावरण में की जायेगी जिससे ध्वनि कम उत्पन्न हो।
- क्षेत्र जहाँ अधिक ध्वनि उत्पन्न होती है वहाँ साइलेन्सर लगाये जाएंगे।
- उपकरणों में साउण्ड प्रूफ एन्क्लोज़र लगाए जायेंगे और ऑपरेटरों के लिए इयर मफ और इयर प्लग प्रदान किये जाएंगे।
- डी.जी. सैट में एकोस्टिक इनक्लोजर का इस्तेमाल किया जायेगा।
- क्षेत्र में हरित पट्टिका का विकास किया जायेगा, जो प्लांट और कॉलोनी क्षेत्र में ध्वनि स्तर को कम करेगी।
- इमारतों की दीवारों और भीतरी छतों पर ध्वनि अवशोषी (एब्सॉर्बिंग) पदार्थ लगाये जाएंगे।
- ध्वनि स्तर का निरंतर विश्लेषण किया जायेगा और उसके अनुसार मशीनों का रख-रखाव किया जायेगा।

## 7.3 जल प्रबंधन

- प्लांट के लिए जल आवश्यकता लगभग 1040 किलो लीटर प्रतिदिन होगी। जिसकी आपूर्ति हेरन नदी व बोरवैल द्वारा की जाएगी।
- परियोजना कार्य से जीरो डिस्चार्ज होगा।
- टेलिंग्स में से पानी निकालने व उसे दुबारा संचालित करने के लिए खास प्रबंधन किए गए हैं, जिसमें फिल्टर प्रैस टेक्नोलोजी का इस्तेमाल टेलिंग्स को डिवाटर कर दुबारा संचालित करने के लिए होगा।
- जल संरक्षण के लिए उचित प्रयास किये जाएंगे।
- प्लांट परिसर में रेन वाटर हारवेस्टिंग भी की जाएगी।

## 7.4 ठोस अपशिष्ट पदार्थ प्रबंधन

- इस प्रक्रिया से कोई भी खतरनाक व्यर्थ नहीं निकलेगा।
- ई.एस.पी. व बैग फिल्टर से इकट्ठा की गयी धूल को दुबारा प्रक्रिया में इस्तेमाल किया जाएगा।

- टेलिंग्स (0.72 मि.ट. प्रतिवर्ष) को निष्क्रय खानों को भरने में इस्तेमाल किया जाएगा।
- ईंटों, टाईल्स व ब्लॉक्स बनाने के लिए उपयुक्त टेलिंग्स को आसपास के भट्टों में बेचा जाएगा।

#### 7.5 हरित पट्टिका विकास और पौधारोपण कार्यक्रम

- कम्पनी द्वारा परियोजना क्षेत्र में 4 हैक्टेयर भूमि में हरित पट्टिका का विकास किया जावेगा। जो कुल परियोजना क्षेत्र 12.10 हैक्टेयर का 33 प्रतिशत है।
- हरित पट्टिका का विकास कार्य तीन वर्षों के अन्दर 10000 पौधे प्रतिवर्ष लगाकर पूरा किया जाएगा।
- ठोस अपशिष्ट पदार्थ क्षेत्र में भी हरित पट्टिका के विकास की योजना है।
- सडक के दोनों तरफ पौधारोपण करने से ध्वनी स्तर कम रहेगा, धूल को उड़ने से रोकने में सहायता मिलेगी और आसपास के पर्यावरण में सुधार होगा।
- सी.पी.सी.बी के निर्देशानुसार पौधों की प्रजातियों का चयन होगा।

